P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
E: ISSN NO.: 2349-980X Vol-II * Issue-XI*July-2015

पीढ़ी अन्तरालगत संघर्ष एवं पारिवारिक सामंजस्य

निशा गुप्ता
विभागाध्यक्षा,
गृहविज्ञान विभाग,
महिला परास्नातक महाविद्यालय,
लखनऊ

वालेन्तिना पिया
शोध छात्रा,
गृहविज्ञान विभाग,
रमाबाई गर्वन्मेन्ट गर्ल्स पी.जी. कालेज,
अकबरपुर, अम्बेडकर नगर

सारांश

पीढ़ी अन्तरालयत संघर्ष का अर्थ है कि पुरानी पीढ़ी का भौतिक जीवन वर्तमान पीढ़ी से न मिलना। जब इन दोनों पीढ़ी के विचारों का आदान–प्रदान मतएक नहीं होते है तो निश्चित संघर्ष होता है और यह संघर्ष कितना आगे बढ़ सकता है इसका मापन करना बड़ा ही मुश्किल है लेकिन जीवन संघर्ष को एक लम्बे समय तक नहीं खीचा जा सकता उसका कोई न कोई स्थाई हल ढूढ़ना ही होता है, और यही स्थायी हल राष्ट्र, समाज एवं पारिवारिक सामंजस्य की श्रेणी में आता है।

पारिवारिक सामंजस्य का तात्पर्य है कि पुरानी पीढ़ी के आचरण, नई पीढ़ी के आचरण से मेल–मिलाप कर रहें हो। अर्थात नई पीढ़ी पुरानी पीढ़ी की नीतियों को समझकर, उन्हें भलो–भाँति जाँच परखकर बड़े ही सरलतापूर्वक कार्यों को स्वीकार करते हो। यही पारिवारिक सामंजस्य कहलाता है। एक अच्छ समाज को चलाने एवं नवीन पीढ़ी के सर्वोत्तम विकास के लिए उचित मानवीय मूल्यों का होना आवश्यक होता है, बालक या बालिका को उचित मार्गदर्शन के लिए तीन मनुष्यों का विशेष योगदान होता है।

''मातृवान, पितवान, गुरूवान'' पुरूषों वेदा अर्थात इन लोगों का योगदान बालक के जीवन में अहम रोल निभाता है।

पीढ़ी अन्तरालगत संघर्ष किसी एक कारण से नहीं उत्पन्न नहीं होता है, बल्कि इसके बहुउद्देशी कारक जिम्मेदार होते है। इन कारको के अन्तर्गत सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, मनोवैज्ञानिक एवं तकनीकी कारक भी हो सकते है। इन कारको सही ढंग से सामाजिक मान्यताओं के साथ शुरू करने के लिए प्रत्येक समाज, समूह या परिवार कर सामंजस्य बैठना पड़ेगा।

मुख्य शब्द : पीढ़ी, संघर्ष, पारिवारिक, सामंजस्य, तकनीक, किवदन्ती, अभिभावक, प्रत्यक्ष, किशोर, विखराव, पीढ़ी अन्तराल गैप, रीतिया, विचारधारा, परम्परागत, परिणाम।

प्रस्तावना

अतीत एवं वर्तमान इतनी तीव्र गति से बढ़ रहे हैं कि पता ही नहीं चल रहा है कि मानव सभ्यता या संस्कृति कितनी शीघ्र परिवर्तन कर रही है। दिन, महीने, वर्ष और सदी आने एवं जाने में समय ही नहीं लगता है। आज विज्ञान ने इतना ज्ञान फैला दिया है, पिता एवं पुत्र–पुत्री अथवा पारिवारिक सदस्यों के नियमों के साथ एक–दूसरे से सामंजस्य मिलाने में भार महसूस करते हैं।[1]

पीढ़ी अन्तराल संघर्ष का अर्थ है, एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी के लोगों का सामंजस्य न मिल पाना। किशोर या किशोरो एक कोरे कागज होते हैं, उन्हें अच्छा बनाना केवल माता–पिता का कार्य ही नहों होता बल्कि समाज भी उसका जिम्मेदार होता है। कहा गया है ''मातृवान, पितृवान, गुरुवान (पुरूषो वेदा)'' अर्थात व्यक्ति को अच्छा एवं सामाजिक बनाने के लिए न केवल माता–पिता हो नहीं बल्कि गुरु का भी अहम रोल होता है। बच्चों के जीवन को आधुनिक तकनीकी उन्हें लुभाती है और वे प्रत्यक्ष प्रमाण की मांग करते हैं, जबकि आज से 20 वर्ष पूर्व माता–पिता केवल समाज में किस्से–कहानी एवं किवदन्ती सुनकर निर्णय लेते थे, उन्हें प्रमाण की आवश्यकता नहीं थी, केवल विश्वास पर समाज चलता था। एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में लगभग निम्नतम् 25–28 साल का अन्तर होता है। आज का समाज 28 वर्ष में कितने परिवर्तन ला देता है। इसका अन्दाजा लगाना मुश्किल होता है, लेकिन किशोरो के स्वस्थ एवं मानवीय मूल्यों के साथ सामंजस्य रखना अति आवश्यक होता है।[2]

माना कोई a पीढ़ी का अभिभावक अपनी b पीढ़ी के अभिभावक की बात मानकर कार्य करने की कोशिश कर रहा है और वह अपने c पीढ़ी के किशोरों के विचारों को नहीं सहन कर पा रहा है, तो निश्चित ही परिवार का विखराव होता है।

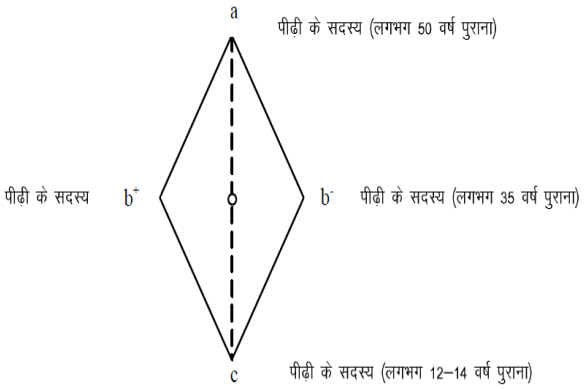

क्योंकि जो b पीढ़ी का अभिभावक होगा तो a पीढ़ी की कुछ बातें अवश्य मानेगा, लकिन c पीढ़ी के किशोरों की बातों को मानने के लिए बाध्य नहीं होगा तो अपने अतीत से सबक लेकर ही नई पीढ़ी को बढ़ाने के लिए अग्रसर होगा अर्थात b पीढ़ी के लोगों को अधिक तनाव सहन करना पड़ता है, क्योंकि b पीढ़ी के सदस्य एकदम से सही जानकारी नहीं रख पाते हैं। वे अतीत को पुनः दोहराना नहीं चाहते हैं इसलिए भावी पीढ़ी में टकराव होता है, जो निम्न है–

1. अभिभावक एवं किशोर–किशोरी के बीच पहला मन–मुटाव उसके शारीरिक या मानसिक परिवर्तन होता है।
2. अभिभावक का विचार किशोर के प्रति अधिक नरम किशोरी के प्रति रूढ होता है।
3. अभिभावक आज भी किशोरी को पराया धन समझते हैं, उन्हें किशोर की अपेक्षा कमजोर समझते हैं।[3]
4. अभिभावक की यही सोच किशार और किशोरियों के लालन–पालन में दूरियां बना देती है।
5. आज किशोर अपनी उम्र और परिवेश के आदर्श या उदण्डता का काय करता है जबकि अभिभावक उसके कार्यों को नसीब से जोड़ देते हैं।
6. यदि अभिभावक अपने बच्चों का विकास उनके साथ रहकर नहीं कर पाते हैं, तो निश्चित रूप से किशोर आने वाले समय में अपने अभिभावक को मात्र अभिभावक मानते हैं, उनके अन्दर से पिता–माता का आदर्श चला जाता है।
7. बढ़ती उम्र में किशोर अपने स्कूली परिवेश के अनुसार कार्य करने की आदत डालता है और अभिभावक चाहता है कि किशोर मेरे विचारों के अनुसार चले। यही कारण है कि दोनों के बीच तनाव होता है। किशोर में समझने की क्षमता बहुत कम होती है लेकिन झगड़ा करना उसे पल भर भी नहीं लगता है। परिणामता माता–पिता के नजरों में किशोर गिर जाता है।
8. किशोर में सुनने, समझने और याद करने की क्षमता अधिक होती है। यह अवस्था उनकी सीखने की अवस्था होती है। वे शीघ्र ही गलत हो या सही किसी भी घटना को शीघ्र ही सीख लेते हैं लेकिन तुलना करना और पालन करना, दोनों ही कमजोर होते हैं। जबकि अभिभावक के अन्दर समझने की क्षमता अधिक होती है और सीखने की कम यही कारण है कि दोनों में सामंजस्य नहीं हो पाता है।[4]
9. किशोर एवं अभिभावक के बीच कम समय 28 व 30 वर्ष का अन्तराल होता है। ऐसी अवस्था में समाज अधिक परिवर्तन ले लेता है, जिससे एक पीढ़ी और दूसरी पीढ़ी में टकराव होते रहते हैं।
10. किशोर के अन्दर सब कुछ बदलने का जुनून होता है, इसका अर्थ है कि यदि उसे सही दिशा में कार्य करने का निर्देशन दिया जाय, तो निश्चित रूप से वह अपने लक्ष्य को पा सकता है। उसके द्वारा किया कार्य देश प्रगति पर किया गया कार्य होगा। जब अभिभावक अपने किशोर को एक सही दिशा में, प्रेरणा देना चाहता है, तो उसे भी बालक बनकर उसके ज्ञान में समाहित होना पड़ता है।[6] इसी प्रकार पीढ़ी अन्तराल अपनी एक पीढ़ी को छोड़कर दूसरी, तीसरी पीढ़ी से अपने स्वभाव अनुरूप कार्य करने की चेष्टा को अनुभूति करता रहता है।

स्व0 डॉ0 ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम ने हमेशा देश को सुधारने के लिए समाज को उच्च विचारों में लीन रहने एवं संस्कारों में सामंजस्यता लाने के लिए छोटे बच्चों में तीसरी पोढ़ी के लोगों में एक अच्छे भविष्य की तलाश करते थे। कहते थे कि तुम ही कल के निर्माता और निर्णायक हो, यदि आप बदलोगे तो समाज जरूर बदलेगा।[7]

पीढ़ी अन्तराल गैप को शैक्षिक सुधार के माध्यम से ही जीवन में सुधार लाया जा सकता है। 19वीं एवं 20वीं सदी में देश की विकास दर बहुत कम थी लेकिन जन्म और मृत्यु दर अधिक थी। हमारे पास संसाधनों की कमी थी। प्रत्येक बच्चे को उचित शिक्षा दिलाने में अभिभावक असमर्थ थे, उन्हें केवल सामाजिक जीवन के आधार पर पीढ़ी में परिवर्तन लाते थे। 21वीं सदी इतनी विकसित हो चुकी है कि अब माता खुद बच्चों से जीवन शैली पूछते हैं। उदाहरण के लिए ग्रामीण जीवन या सामाजिक जीवन जैसे–मेले, त्यौहार, क्षेत्रीय मान्यतायें पर्व बाजार, जादू–टोना या विचार आदि क्षेत्र में तर्क कराते हैं और पर्याप्त सबूतों का सवाल खड़ा करते हैं। आधुनिक पीढ़ी को लगता है सामाजिक मान्यतायें एकदम से बकवास है। जब (a) पीढ़ी का व्यक्ति (b) पीढ़ी के व्यक्ति से उपयुक्त विषयों में बात करता है, तो वह कहता है कि हो सकता या होता होगा, मैं भी मानता हूं, उसमें तर्क करने की क्षमता कम है क्योंकि विज्ञान इस पीढ़ी तक अधिक प्रभाव नहीं डाल सका था। फिर भी तर्क या असामंजस्य की स्थिति तो निश्चित ही पैदा कर दी। वही बात जब (b) पीढ़ी का सदस्य (c) पीढ़ी के सदस्य से कहता है, तो (c) पीढ़ी का सदस्य (without Hisitate) बिना हिचकिचाहट के उक्त बातों को नकार देता है और (b) पीढ़ी के सदस्य से प्रमाण मांगता है। ऐसा कहां होता है और प्रमाण न मिलने पर तर्क प्रस्तुत करता है।

जैसे–सती प्रथा, देव दासी प्रथा, बहु पत्नी प्रथा, मालिक और नौकर, गुरूकुल, देव पूजा, ब्राह्मण पूजा, वर्ग विभेद, जातिवाद, बालिका हत्या, बाल विवाह, मन्दिरों में एक ही वर्ग का वर्चस्य, धर्मान्तरण भेद, आहरण की मांग, दहेज प्रथा, ब्राह्मणों के द्वारा रची दन्त कथायें, विवाह के

समय, रची प्रथायें, फेरों के नियम, घूंघट का तत्पर्य, कपड़ो के पहनावे पर टिप्पणी, वेश्या प्रथा, विधवा के साथ किया जाने वाला व्यवहार, कुछ जातियों में कम उम्र में पति की मृत्यु हो जाने पर दोबारा शादी न करने की अनुमति, लड़के और लड़की में अन्तर आदि अनेक रीति–रिवाजों में भी अपने विशेष तर्क को प्रस्तुत करते हैं। यही नहीं (a) पीढ़ी के लोग विवाह जैसी रस्में दूसरों के द्वारा तय करते थे, (b) पीढ़ी के लोग देखकर तय करते थे लेकिन (c) पीढ़ी के लोग स्वास्थ्य सर्टीफिकेट एवं व्यवसाय सर्टीफिकेट लेने के बाद भी अनेक तर्कों के माध्यम से सामाजिक बन्धनों में बंधने की कोशिश करते हैं। तात्पर्य यह है कि सामाजिक संघर्ष होता रहता है।[8]

''पीढ़ी अन्तराल संघर्ष सदैव एक क्रान्तिकारी प्रक्रिया होती है जिसमे वर्तमान पारिवारिक ढांचे को बेकार माना जाता है। इसकी सफलता परिवार के आन्तरिक रूपान्तरण की दशा पर निर्भर करती है।''[9] इस परिभाषा में दो विशेषताएं प्रमुख हैं– प्रथम परिवार की वर्तमान दशा के प्रति असन्तोष और दूसरा परिवार की वर्तमान रीतियों का रूपान्तरण, जो असन्तोष (संघर्ष) का कारण रहा है।[10] पीढ़ी अन्तराल संघर्ष भारतीय समाज में प्रथम परिवर्तन अंग्रेजों के आगमन के समय उत्पन्न हुए थे। यहां के सांस्कृतिक आदर्श नवीन प्रशासनिक, वैचारिक और अर्थिक शक्तियों के प्रभाव से परिवर्तन हुए, उनके आगमन से परिवार में नवीन उदारवाद और तर्कबुद्धि के संघर्षों ने प्रवेश किया। शहरी वातावरण के परिवार में आधुनिक युग के प्रभावों को अधिक स्वीकार किया गया। आधुनिकी प्राविधिकी, विज्ञान की प्रगति, पाश्चात्य विचारधारा, पाश्चात्य बन्धनो तथा विचार सबसे पहले कस्बों एवं नगरों के परिवारों में समाहित हुए। अपने परम्परागत बन्धनो से दूर शहरी परिवार भी इन परिवर्तनों का स्वागत बड़े हर्ष के साथ कर रहा है। इतना ही नहीं इन बाहरी परिवर्तनों को सीधे सीधे स्वीकार किया जा रहा है और उनके सम्बन्ध में किसी भी प्रकार का कोई भी अवक्षेप या प्रश्न, तर्क–संगत नहीं किये जा रहे। इससे यह स्पष्ट है कि शहर का पढ़ा–लिखा वर्ग अधिक संग्रहणशील, अधिक प्रबुद्ध और अधिक तार्किक होता है।[11] वे किसी बात के सभी पहलुओं की परीक्षा करते हैं और उन पर प्रश्न करते हैं, परन्तु जब उन्हें स्वीकार करने का प्रश्न उठता है, तो किसी बात से सहमत भी हो जाते हैं। नई बात की तार्किक वैधता अथवा परिवर्तन की अनिवार्यता के सम्बन्ध में वे सर्वाधिक खुले और विशाल मस्तिष्क वाले होते हैं। परम्परागत हिन्दू संयुक्त परिवार में संघर्ष के विषय पर समाजशास्त्रियों में विभिन्न और प्रायः विरोधी विचारधाराएं पायी जाती हैं।[12]

अन्तर पीढ़ी संघर्ष के कारण एक नहीं है बल्कि इसके अनेक कारण परिवार में समाहित होते हैं, जो निम्न प्रकार से उल्लिखित हैं–

सामाजिक संरचना में तीव्र परिवर्तन

अन्तर पीढ़ी संघर्ष के प्रमुख कारण आधुनिक युग में सामाजिक संरचना में होने वाले तीव्र परिवर्तन हैं। इस तीव्र परिवर्तन के परिणाम स्वरूप किशोर पीढ़ी तो अपने मूल्यों को सरलला से बदल नहीं पाती है। जबकि पुरानी पीढ़ी अपने मूल्यों को छोड़ नहीं पाती। इससे दोनों पीढ़ियों में पाये जाने वाले मूल्यों में अन्तर संघर्ष होने लगता है तथा इसमें अन्तराल बढ़ जाता है। यह अन्ततः अन्तर पीढ़ी संघर्ष को जन्म देता है। 'किंग्स्ले डेविस' ने सामाजिक संरचना में होने वाले परिवर्तन को अमेरिकी समाज में अन्तर पीढ़ी संघर्ष का प्रमुख कारण माना है। इनका कहना है कि अत्याधिक तीव्र सामाजिक परिवर्तन युवाओं एवं उनके माता–पिता में संघर्ष को बढ़ावा देता है। इसी के परिणाम स्वरूप अनेक युवाओं ने अपने परिवारों से विद्रोह कर दिया है।[13]

पारिवारिक संरचना में संघर्ष एवं विघटन

नवीन पीढ़ी कर्ता की निरंकुश सत्ता में नहीं रहना चाहती। इसलिए नवीन पीढ़ी के लोग कर्ता के आदेशों एवं निर्णयों को नहीं मानते हैं। इसमें केवल कर्ता की भावनाओं को ही ठेस नहीं पहुंचती अपितु इसमें अन्तर पीढ़ी संघर्ष को भी प्रोत्साहन मिलता है। अमेरिका तथा पश्चिमी समाजों में माता–पिता की सत्ता में हास–अन्तर पीढ़ी संघर्ष का प्रमुख कारण रहा है।

मानदण्डों (आदर्शों) एवं मूल्यों में संघर्ष

संघर्ष की प्रक्रियाएं समाज के पुरातन एवं नवीन आदर्शों एवं मूल्यों में संघर्ष की स्थिति पैदा कर देती है। इससे वैयक्तिक, पारिवारिक, सामुदायिक तथा सामाजिक विघटन को प्रोत्साहन मिलता है। क्योंकि अन्तर पीढ़ी संघर्ष परिवार से प्रारम्भ होता है।

पारस्परिक विश्वास की कमी

अनेक विभिन्न पीढ़ियों में पाया जाने वाला विश्वास कम होने लगता है, तो अन्तर पीढ़ी संघर्ष विकसित हो जाता है। (b) पीढ़ी यह मानती है कि नई (a) पीढ़ी 'ईजी गोइंग' के दर्शन अपनाने वाले हैं। वे कम ईमानदार एवं इतने बहादुर व स्पष्टवादी नहीं हैं, जितने की पुराने पीढ़ी के लोग। इसके विपरीत नई पीढ़ी के लोग पुरानी पीढ़ी के लोगों को 'आउट आफ डेट' पुराने फैशन के तथा दकियानूसी विचारों को मानते हैं। वे समझते हैं कि हमें हर बात पर रोका–टोका जाना इन्हीं दकियानूसी विचारों का परिणाम है। यह अविश्वास की पीढ़ी संघर्ष को जन्म देता है।[14]

दोषपूर्ण समाजीकरण

दोषपूर्ण समाजीकरण को भी अन्तर पीढ़ी संघर्ष का कारण माना गया है। क्योंकि अभिभावक नौकरी करते समय अपने बच्चों की देख–रेख सामाजिक पारिस्थिति में नहीं कर पाते हैं, जिससे उनके मूल्यों में परस्पर विरोध विकसित होने लगता है तथा वे एक–दूसरे से अलग दृष्टिकोण अपनाने लगते हैं। इससे अन्तर पीढ़ी संघर्ष में वृद्धि होती है। इस संघर्ष के और अनेक कारण हैं। जैसे–पश्चिमी संस्कृति, नगरीकरण एवं औद्योगिकीकरण, पीढ़ियों में शिक्षा की दृष्टि से अन्तराल।

पुरानी पीढ़ी का नई पीढ़ी पर दोषारोपण

प्रत्येक पुरानी पीढ़ी, नई पीढ़ी को बिगड़ी हुई पीढ़ी मानकर उस पर अनेक प्रकार का दोषारोपण करती है। आचार्य रजनीश (Acharya Rajneesh) कहते हैं कि उन्होंने दुनिया की पुरानी किताब देखी हैं और उसे देखकर हैरान हो गये हैं उन्हीं के शब्दों में ''चीन में सम्भवता दुनिया की सबसे पुरानी किताब है'', जो साढ़े दस हजार वर्ष पुरानी है और उस किताब की भूमिका में

लिखा हुआ है कि आाज के लोग बिल्कुल बिगड़ गये हैं। पहले के लोग बहुत अच्छे हैं। मैं बहुत हैरान हुआ, आज तक जमीन पर एक भी किताब ऐसी नहीं है जिसमें यह लिखा हो आज–कल के लोग अच्छे हैं। परन्तु यह केवल मिथ्या तथ्य है। आचार्य रजनीश ठीक कहते हैं कि 'यदि पहले के लोग अच्छे थे, तो ढ़ाई हजार पहले बुद्ध ने किन लोगों को सिखाया था कि चोरी मत करो, झूठ मत बोलो, हिंसा मत करो? जीसस, क्राइस्ट, कृष्ण, बुद्ध और कन्फ्युशियरा किनके लिए रोये थे? ये किनसे कहते रहे कि तुम अच्छे हो जाओगे।' वास्तविकता यह है बीते हुए कल के विद्रोही आज की नून–तेल–लकड़ी के फेर में उलझे थके सुरक्षा की तलाश में आने वाली कल की पीढ़ी की आलोचना में लग जाते हैं।[15]

पीढ़ी अन्तराल संघर्ष के परिणाम

अन्तराल पीढ़ी संघर्ष के परिणाम व्यक्ति, परिवार, समुदाय एवं समाज की दृष्टि से अच्दे नहीं होते हैं क्योंकि दूसरे इन सभी स्तरों पर विघटन की स्थिति पैदा हो जाती है। भारत में भी इस प्रकार का संघर्ष नकारात्मक परिणाम वाला माना जाता है। वस्तुतः पहले भारतीय समाज में वर्ण व्यवस्था, आश्रम पद्धति व्यवस्था परिवार प्रणाली जाति व्यवस्था, विवाह की परम्परागत संस्था तथा मूल्य व्यवस्था इत्यादि कुछ ऐसे महत्वपूर्ण आधार थे, जो अन्तराल पीढ़ी के लोग में सामंजस्य बनाये रखने में सहायता प्रदान करते थे। इससे समाज भी स्थायित्व बना रहता था तथा व्यक्तियों का जीवन भी सुचारू रूप से चलता रहता था।[16]

परन्तु औद्योगिकीकरण, नगरीकरण, आधुनिक शिक्षा जन संचार के माध्यमों, पश्चिमी संस्कृति इत्यादि अनेक कारणों से भारतीय सामाजिक संरचना में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। इनसे अन्तर पीढ़ी संघर्ष को प्रोत्साहन मिला है तथा विघटनकारी परिणाम भी सामने आये हैं, जिसे निम्न प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता है।

1. अन्तर पीढ़ी एवं अन्तराल पीढ़ी संघर्ष के परिणाम स्वरूप वैयक्तिक एवं पारिवारिक विघटन को प्रोत्साहन मिलता है। दूसरे व्यक्तियों में अलगाव की प्रवृत्तियां विकसित होने लगती हैं। साथ ही परिवार की स्थिरता पर गहरा असर पड़ता है तथा सदस्यों के मतैक्य के अभाव में तनावपूर्ण स्थिति बनी रहती है।[17]
2. अन्तर पीढ़ी संघर्ष के परिणाम स्वरूप सामुदायिक विघटन की परिस्थिति भी पैदा हो जाती है। समुदाय का सम्पूर्ण वातावरण कलुषित हो जाता है जिससे पक्षपात, भ्रान्त धारणाओं, द्वेष, घृणा एवं अविश्वास आदि को प्रोत्साहन मिलता है, समुदाय के सदस्यों में प्रेम, सहानुभूति, सहयोग आदि उच्च मानवीय मूल्यों का ह्रास होने लगता है।
3. अन्तर पीढ़ी एवं अन्तराल पीढ़ी संघर्ष के परिणाम स्वरूप अन्ततः सामाजिक विघटन को प्रोत्साहन मिलता है तथा आपसी सहयोग दूसरों के प्रति सद्भावना एवं सहानुभूति समाप्त होने लगते हैं। इससे परिवार में आदर्श विहीनता की स्थिति विकसित होने का खतरा पैदा हो जाता है।
4. अन्तर पीढ़ी एवं अन्तराल पीढ़ी संघर्ष समाज की प्रगति को भी धीमा कर देते हैं। पीढ़ियों पर पाया जाने वाला अविश्वास सामाजिक प्रगति पर बुरा प्रभाव डालता है तथा कल्याणकारी योजनाएं भी ठीक प्रकार से लागू नहीं हो पाती है।
5. अन्तर पीढ़ी एवं अन्तराल पीढ़ी संघर्ष परिवार जैसी मौलिक इकाई का महत्व कम करते हैं, जिससे समाजीकरण की प्रक्रिया ही प्रभावित नहीं होती, अपितु परिवार के सामाजिक नियंत्रण में भी काफी शिथिलता आ जाती है।
6. अन्तर पीढ़ी एवं अन्तराल पीढ़ी में परिवारों के बीच मतऐक न हाने के कारण मानवीय मूल्यों का नष्ट होना निश्चित हो जाता है, जिससे संघर्ष प्रारम्भ हो जाता है।
7. भौतिकवादी वस्तुओं में अपना–अपना अधिकार बताने पर पीढ़ी अन्तर एवं अन्तराल पीढ़ियों में संघर्ष की स्थिति पैदा होने लगती है।[18]

अन्तर पीढ़ी एवं अन्तराल पीढ़ी संघर्ष को दूर करने के उपाय

अन्तर पीढ़ी एवं अन्तराल पीढ़ी संघर्ष को दूर करने के लिए निम्नलिखित उपाय सहायक हो सकते हैं–

1. परिवार एवं शिक्षा संस्थाओं में अधिक तालमेल की आवश्यकता है ताकि पारिवारिक मूल्यों एवं शिक्षा संस्थाओं द्वारा दिये जाने वाले मूल्यों म पूर्ण सामंजस्य बना रहे तथा दोनों एक–दूसरे को प्रबल बनाने में सहयोग दे सकें। इससे समाजीकरण भी उचित प्रकार से होगा तथा सामाजिक नियंत्रण के औपचारिक एवं अनौपचारिक साधनों में ताालमेल भी बना रहेगा।
2. प्रौढ़ो के दृष्टिकोण में समयानुकूल परिवर्तन करने हेतु संचार साधनों का लाभ उठाया जाना चाहिए, जिस प्रकार से महिलाओं एवं बच्चों के लिए विशेष कार्यक्रम प्रसारित किये जाते हैं। ठीक इसी प्रकार वृद्धों के लिए भी टेलीविजन पर कार्यक्रम दिखाये जाने चाहिए।
3. आने वाली पीढ़ी को भारत की सांस्कृतिक विरासत का पूर्ण परिचय कराया जाए ताकि उसमें अपने माता–पिता एवं अन्य बड़ों के प्रति सम्मान जैसे आदर्श प्रबल हो सके।
4. विभिन्न पीढ़ियों में शिक्षा के अन्तराल को दूर किया जाना चाहिए। इसके लिए एक ओर शिक्षा संस्थाओं का विस्तार किया जाये और दूसरी ओर प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रमों का भी उतनी ही तेजी से लागू किया जाये।[19]
5. नई पीढ़ी के समाजीकरण में पूरी सावधानी रखी जाये ताकि उनमें बड़ों के प्रति सम्मान, समानता एवं राष्ट्रीय विकास के मूल्यों के प्रति मानवीय आस्था विकसित हो सके।
6. दूर–संचार के माध्यम से भारतीय सांस्कृतिक विरासत एवं अच्छे विचारों के प्रति दर्शन कराया जाये।
7. पश्चिमी सभ्यता को नई पीढ़ी में पूर्णतया हाबी न होने दिया जाये, जिससे पीढ़ी अन्तर के संघर्ष को रोका जा सके।[20]

इस प्रकार से सावधानी रखकर हम अपनी सभ्यता को नई और उजड़ती पीढ़ी अन्तराल संघर्ष को सामंजस्य रूप वाले मानवोय मूल्यों के विश्वास की रक्षा कर सकते हैं।(21)

निष्कर्ष

पीढ़ी अन्तराल संघर्ष को अधिक नहीं बढ़ने देना चाहिए। अभिभावक का यह प्रथम कर्तव्य होना चाहिए कि यदि भावी पीढ़ी के साथ संघर्ष हो रहा है तो उसे प्रथम दृष्टि में ही संघर्ष को समझकर अपने अतीत की पीढो के व्यवहारों को जानने की कोशिश करें निश्चित ही भावी पीढ़ी के संघर्ष का सामंजस्य मिलेगा। अर्थात भावी पीढ़ी के विचारों और मनोवैज्ञानिक रूप से आये विकारों को बड़े सरलता एवं सौम्यता से हल करना होगा। बालक किशोरों अवस्था में अधिक उग्र होता है। अभिभावक को इसी उम्र में किशोर या किशोरी को ध्यान देना होगा। उनके प्रत्येक दिन महीने या वर्ष के क्रिया कलापों उनके विचारों से किये जाने वाले आचरणों को सहायता से समझकर उन्हें उनकी गलतियों का ध्यान दिलाना चाहिए और उचित या मानवीय दायरें में रहकर दण्डित भी करना चाहिए। ध्यान रहे कि आप एक बालक या किशोर को केवल नहीं सुधार रहे है बल्कि एक पीढ़ी के लिए भविष्य का निर्माण कर रहें हैं। अतः पीढ़ी संघर्ष को पारिवारिक एवं व्यक्तिगत सामंजस्य के माध्यमों से ही सुधारा जा सकता है। जिसे भावी पीढ़ी के लिए मानवीय मूल्य या नीति कहा जा सकता है। जिससे समाज का अच्छा विकास हो सकेगा। ध्यान रहे हमें पश्चिमी सभ्यता को अपनी भावी पीढ़ी पर आवश्यकता से अधिक न थोपो उनमें मानवीय आस्था को स्थापित रखना पड़ेगा।

सन्दर्भ सूची

1. J.L. Gillin and J.P. Gillin, Cultural Sociology, P. 625
2. Karl Mannheim, Essays and Sociology of Knowledge-1952, P. 211
3. Madam G.R. Social Change and Problems of Development in India-1971, P. 122
4. Shyam Bharti, Dainik Tribune-2000, P. 16
5. D.V. Kulkarni "Juvenile Delinquency in Social Welfare in India", P. 347
6. Hansa Sheth, Juvenile Delinquency: The law of the forty eight states, P. 21
7. Dr. A.P.J. अब्दुल कलाम; पायनियर, कानपुर संस्करण 26 जनवरी, 2006
8. Lowell J. Car, Delinquency Control, PP. 89-92
9. Sinha R. Social Changing in India Cultural-1975, P. 76
10. J.L. Gillin and J.P. Gillin, Cultural Sociology, P. 786
11. E.R. Mowrer, Diorganization: Personal Social, P. 102
12. Agrawal, B.R. in a Mobile Commercial Community, Sociological Guletin, Bol-IV No. 12, Also see R. Sinha opsit, P. 49
13. M.A. Ellioit and F.E. Merril, Social Disorganization, P. 57
14. S.M. Robisom can Delinquency be Measured, P. 205
15. आचार्य रजनीश–प्रेम है, द्वार प्रभु का, पृ0–78
16. Bipin Chandra, "The Way Out" in seminar no. 322, June, 1986, P. 34
17. Ram Ahuja, Social Problems in India, P. 213-228
18. S.J. States, corruption in the Soviet System and Problems of Communism, Vol. 28 No. 1, Jan-Feb-1972 U.S.A. Washington.
19. Paul Martin, "Working with Nope" in the Lion in India, April, 1986, P. 19
20. डा0 धर्मवीर महाजन एवं डा0 कमलेश महाजन–भारतीय समाज : मुद्दे एवं समस्याएं, पृ0 152–160
21. Ram Ahuja "Social Problems in India P. 229.